

>

Title: Problems faced by residents and farmers in Campbell Bay in Andaman & Nicobar Islands.

श्री विष्णु पद राय (अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह): सभापति महोदय, मैं अंडमान निकोबार द्वीपसमूह, जो भारत का आखिरी हिस्सा है, जिसका नाम कैम्बल बे है, जिसे इन्दिरा गांधी के नाम पर इन्दिरा पाइंट भी लोग कहते हैं। उस धरती पर 2004 में सुनामी आई और बड़ी तबाही हुई। भारत सरकार ने बड़े-बड़े डॉयलॉग मारे कि सुनामी शैल्टर के नाम पर उनका यह कर दिया, वह कर दिया। देश का कोई ऐसा मंत्री नहीं बचा, जो वहां घूमकर नहीं आया हो। लेकिन आज हालत क्या है, मैं आपको बताना चाहता हूँ।

1980 में भारत में एक्स-सर्विसमेन को, आर्मी के लोगों को लेकर इंडोनेशिया के बगल में कैम्बल बे में बिठाया गया था। सुनामी के पश्चात् परमानेंट शैल्टर्स बने, करोड़ों रुपये का घोटाला किया, लेकिन अंडमान निकोबार के जो कॉमर्शियल ट्रीज़ हैं, जिनकी लम्बाई 80 फीट से 200 फीट होती है, शैल्टर्स के बगल में वे कॉमर्शियल ट्रीज़ खड़े हुए हैं। उस स्थान का नाम गांधीनगर और लक्ष्मीनगर है। वहां पी.एच.सी. के बगल में, शैल्टर्स के बगल में बड़े वाले पेड़ खड़े हैं। उनको काटने के नाम पर इसका-उसका बहाना कर रहे हैं। उनको तुरन्त कटवाया जाये, यह मेरी पहली मांग है।

दूसरी मेरी मांग है कि कैम्बल बे को जीरो पोइंट से...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Please raise only one point.

SHRI BISHNU PADA RAY: It is only the issue of Campbell Bay. I am not diverting from it. कैम्बल बे को जीरो पोइंट से बाजार तक सुनामी के नाम पर डीपनिंग वाल बनाई गई, सी वॉल बनाई गई, उस पर 46 करोड़ रुपया खर्च हुआ। वह वॉल तो बना दी गई, लेकिन वॉल के होल से पानी आता है, जाता है। मैं मांग करूंगा कि उस एरिया में मिट्टी फिल-अप करके जो पंचायत का मार्केट है, जो हॉज़पाइप हैं, वहां शॉपिंग कॉम्पलैक्स बनाने के लिए लैंड फिल करें।

आखिरी कैम्बल बे की एक और समस्या किसान भाईयों की है। करीब-करीब 2200 किसान लोगों के जो खेत गांधीनगर कॉमर्शियल बाजार से शास्त्रीनगर तक डूबे पड़े हैं, आज तक उस जमीन पर डूबे पड़े हैं। मैं मांग करूंगा कि तुरन्त गैवियन बॉक्स केबिन जो बनाया गया, जैसा पुदुच्चेरी में बनाया गया, वैसा केबिन बनाया जाये। वहां मिट्टी भर दी जाये और स्लूज़ गेट बना दिया जाये और किसानों की जमीन में अर्थ फिल किया जाये, यह हमारी मांग है।